DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अर्थविज्ञान

LIVE 19-04-2024 05:00 PM

भाषाविज्ञान

- ध्वनि — स्तिम ग्रासमान वर्नर मूर्धन्य तालव्य
- शब्द
- वाक्य
- अर्थ —

अर्थविज्ञान (Semantics)

अर्थ का लक्षण

शब्द के द्वारा जिस अर्थ की प्रतीति होती है, उसे ही अर्थ कहते हैं ।

अर्थ का सामान्य लक्षण 'प्रतीति' है। प्रत्येक व्यक्ति शब्द को सुनकर कुछ अर्थ समझता है । उसकी यह व्यक्तिगत अनुभूति 'प्रतीति' ही उसका अर्थ होता है। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्येक भाषा में एक ही अर्थ के लिए पृथक्-पृथक् शब्द हैं। शब्दों के अर्थ स्वाभाविक नहीं, अपितु सांकेतिक एवं यदृच्छामूलक हैं। एक ही शब्द का विभिन्न भाषाओं में विभिन्न अर्थ होता है। प्रत्येक भाषा का वक्ता और श्रोता अपनी भाषा में संकेतित अर्थ को ही ग्रहण करता है ।

अर्थज्ञान कैसे होता है ?

मन में विचार उठते हैं, वक्ता शब्दों के द्वारा उन्हें प्रेषित करता है, श्रोता कान से उन शब्दों को सुनता है, मन को उनके अर्थों की प्रतीति होती है। भाषा वक्ता से लेकर श्रोता तक आदि से अन्त तक, मानसिक पक्ष में अनुस्यूत है।

अर्थज्ञान के दो साधन — अर्थ का ज्ञान प्रत्यय या प्रतीति के रूप में होता है। प्रतीति या ज्ञान के दो साधन हैं –

(१) आत्म- प्रत्यक्ष (स्व-प्रत्यक्ष या आत्म-अनुभव),

(२) पर प्रत्यक्ष (पर-अनुभव)।

(१) आत्म- प्रत्यक्ष – आत्म- प्रत्यक्ष का स्वयं किसी वस्तु आदि को अपनी आँखों आदि से देखना या अनुभव करना । जैसे मनुष्य, स्त्री, गाय, अश्व, पक्षी आदि को देखकर स्वयं ज्ञान प्राप्त करना। इसी प्रकार संतरा, नीबू आदि का रस स्वयं चखकर उनके रस का अनुभव करना । यह आत्म- प्रत्यक्ष है। आत्म- प्रत्यक्ष स्पष्ट, अधिक प्रामाणिक और स्थायी होता है। आत्म- प्रत्यक्ष के भी दो भेद हैं—

(क) बाह्य- इन्द्रिय- जन्य,

(ख) अन्तरिन्द्रिय-जन्य

(क) बाह्य - इन्द्रिय-जन्य – बाह्य इन्द्रियाँ हैं— आँख, नाक, कान, त्वचा और जिह्वा । आँख से देखी हुई वस्तु, नाक से सूँघी हुई- गन्ध, कान से सुना हुआ शब्द, त्वचा से छुआ हुआ पदार्थ और जीभ से चखा हुआ स्वाद, बाह्य- इन्द्रिय-जन्य ज्ञान या अनुभव है। इनका ज्ञान और इनकी प्रामाणिकता इन्द्रियों ने स्वयं प्रत्यक्ष की है।

(ख) अन्तरिन्द्रिय-जन्य ज्ञान – अन्तरिन्द्रिय या अन्तःकरण मन है। कुछ सूक्ष्म चीजों का ज्ञान बाह्य इन्द्रियाँ नहीं कर पातीं, उनका ज्ञान मन करता है। जैसे - सुख या दुःख का अनुभव, शोक और क्रोध का अनुभव, भूख-प्यास का अनुभव आदि। शोक, दुःख, हर्ष, क्षोभ आदि का अनुभव व्यक्ति स्वयं मन से करता है । यह अन्तरिन्द्रिय-जन्य आत्म-प्रत्यक्ष है। अन्तरिन्द्रिय से होने वाला प्रत्यक्ष सूक्ष्म होने के कारण कम स्पष्ट और कुछ अंश तक अनिर्वचनीय एवं अवर्णनीय होता है।

(२) पर- प्रत्यक्ष– पर- प्रत्यक्ष का अर्थ है — जिसे पर या दूसरे ने देखा है। जिन देशों, स्थानों, पर्वतों, समुद्रों आदि को हमने स्वयं नहीं देखा है, उनका ज्ञान हम दूसरों के प्रत्यक्ष से करते हैं, जिन्होंने स्वयं उसे देखा है। पर प्रत्यक्ष के आधार पर ही हम भूगोल में सभी देशों, नगरों, नदियों, समुद्रों, दर्शनीय स्थलों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। पर प्रत्यक्ष में ही आप्तवाक्य, आप्त-वचन या प्रामाणिक व्यक्तियों के कथन भी आते हैं। अतएव वेद, शास्त्र, स्मृतियों आदि से हम पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, स्वर्ग, नरक, मोक्ष, ईश्वर, जीव, आत्मा-परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

शब्द और अर्थ का सम्बन्ध

संकेतग्रह — शब्द और अर्थ में कोई सम्बन्ध है या नहीं? यह प्रश्न स्वाभाविक है। 'गाय' कहने से 'गाय' पशु अर्थ ही क्यों लिया जाता है? अश्व आदि अन्य पशु क्यों नहीं? इसका उत्तर यह है कि प्रत्येक सार्थक शब्द किसी अर्थ (वस्तु) विशेष का बोध कराता है। कौन सा शब्द किस अर्थ का बोध कराता है, यह संकेतग्रह पर निर्भर है। यह पहले कहा जा चुका है कि (प्रत्येक भाषा में कोई शब्द किसी अर्थ को संकेतित करता है। प्रत्येक भाषा में इस शब्द का यह अर्थ होगा, यह संकेतित है। यह संकेत सामान्यतया स्वेच्छा-जन्य या याद्दच्छिक (यद्दच्छा-जन्य) होता है) प्रारम्भ में कोई व्यक्ति किसी विशेष अर्थ में किसी शब्द का प्रयोग करता है। बाद में वह शब्द उस समाज या उस भाषा में लोकप्रिय हो जाता है। वही उस शब्द का संकेतित अर्थ माना जाता है। एक ही शब्द (या ध्वनि-समूह) विभिन्न भाषाओं में

विभिन्न अर्थ बताता है- अंग्रेजी Know (नो, जानना) संस्कृत और हिन्दी में निषेधार्थक 'नो' माना जायेगा, knee (नी, घुटना) संस्कृत के अनुसार 'नी' (ले जाना) होगा। अत: यह माना जाएगा कि किसी एक ध्वनि का कोई एक अर्थ नहीं है। किसी शब्द से किसी अर्थ का सम्बन्ध स्थापित करना 'संकेतग्रह' है। इसी प्रकार किसी ध्वनि-समूह से किसी वस्तु का सम्बन्ध स्थापित करना या बोध कराना 'संकेतग्रह' है। यह संकेतग्रह लोक व्यवहार एवं अनुशासन से होता है ।

आवाप - उद्वाप या अन्वय-व्यतिरेक - तत्सत्त्वे तत्सत्त्वम अन्वयः 'तदभावे तदभावः व्यतिरेकः'जिस शब्द के होने पर जो अर्थ बना रहेगा, उसे 'अन्वय' कहेंगे । जिस शब्द के न होने पर जो अर्थ नहीं रहेगा, उसे 'व्यतिरेक' कहेंगे] अन्वय' को 'आवाप' और 'व्यतिरेक' को 'उद्वाप' कहते हैं। बालक के अर्थज्ञान की प्रक्रिया को देखें तो ज्ञात होगा कि वह अन्वय- व्यतिरेक की पद्धति से भाषा सीखता है।

'गाय लाओ',

'गाय ले जाओ',

'घोड़ा लाओ',

'घोड़ा ले जाओ।'

इन चार वाक्यों से बालक ४ शब्द सीखता है—गाय, घोड़ा, लाओ, ले जाओ। प्रथम दो वाक्यों में 'गाय' शब्द है । 'लाओ' कहने पर 'गाय' पशु लाया गया। 'ले जाओ' कहने पर वह 'गाय' हटाई गई। दोनों वाक्यों में 'गाय' शब्द रहा। इससे बालक को स्पष्ट हुआ कि 'गाय' शब्द का अर्थ यह गाय- नामक पशु है। अन्य दो वाक्यों से 'घोड़ा' का अर्थ स्पष्ट हुआ । 'लाओ' से लाना होता है,

'ले जाओ' से हटाना होता है, यह स्पष्ट हुआ । इस अन्वय-व्यतिरेक पद्धति से बालक को एक-एक शब्द का अर्थज्ञान होता है।

बिम्बनिर्माण – मनोविज्ञान की दृष्टि से मनुष्य के मस्तिष्क पर प्रत्येक शब्द का बिम्ब (चित्र) अंकित होता है। यह बिम्ब स्थायी रूप से मस्तिष्क में बना रहता है। 'गाय' देखने पर गाय का बिम्ब अंकित हुआ । पुनः गाय देखने पर वह बिम्ब उदबुद्ध हो जाता है और हम गाय को पहचान लेते हैं। इसी प्रकार वस्तु का बिम्ब मन पर अंकित होता है, साथ ही उसका वाचक शब्द (गाय आदि) भी संस्काररूप में अंकित हो जाता है। इस शब्द (गाय शब्द) और अर्थ या वस्तु (गाय - पशु) के स्थिर मानसिक संस्कार को बिम्ब - निर्माण कहते हैं । इस बिम्ब-निर्माण का फल यह होता है कि 'गाय' शब्द से 'गाय' अर्थ संबद्ध हो गया और भविष्य में 'गाय' पशु को देखते ही 'गाय' शब्द उपस्थित हो जाता है ।

दार्शनिक दृष्टिकोण – दार्शनिक या भाषाशास्त्रीय दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि शब्द और अर्थ अन्योन्याश्रित (Interrelated) हैं। शब्द शरीर है: अर्थ आत्मा है। दोनों को मिलाकर 'सार्थक शब्द' बनता है। अर्थ के बिना शरीर 'निर्जीव' है और शब्द के बिना 'अर्थ' अग्राह्य या अप्रयोज्य (प्रयोग के अयोग्य) है। शब्द मूर्तरूप देता है और अर्थ उसमें चेतनता देता है। अतः सार्थक प्रयोग के लिए दोनों का समन्वितरूप में उपस्थित होना अनिवार्य है । अतएव भर्तृहरि ने वाक्यपदीय में शब्द और अर्थ को एकतत्त्व के ही दो अभिन्न अंग माने हैं।

एकस्यैवात्मनो भेदौ शब्दार्थावपृथक् स्थितौ । **(वाक्य० २ - ३१)**

संकेतग्रह (अर्थज्ञान) के साधन

आचार्य जगदीश ने 'शब्दशक्ति- प्रकाशिका' में संकेतग्रह या अर्थज्ञान के ८ साधन माने हैं-

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमान - कोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च ।
वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति सांनिध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः ॥

१. व्याकरण,
२. उपमान,
३. कोश,
४. आप्तवाक्य,

५. व्यवहार,

६. वाक्यशेष (प्रकरण),

७. विवृति (विवरण, व्याख्या),

८. प्रसिद्ध पद का सांनिध्य ।

(१) व्याकरण - व्याकरण शब्दों के अर्थ के ज्ञान में अत्यन्त सहायक है। उससे ही प्रकृति-प्रत्यय, शब्दरूप, समास, तद्धित, कृत्, स्त्रीलिंग प्रत्ययों आदि का बोध होता है। कर्ता कृ (करना) + तृ (ता प्रत्यय वाला अर्थ), कर्ता-करने वाला, अर्थ ज्ञात हुआ। पठ् से पठति, अपठत् पठिष्यति — पढ़ता है, पढ़ा, पढ़ेगा का अन्तर व्याकरण ही बतायेगा। वासुदव वसुदव + अ (पुत्र अर्थ में), वसुदेव का पुत्र, अर्थ व्याकरण से ही स्पष्ट होगा।

(२) उपमान——उपमान का अर्थ है सादृश्य। सदृश वस्तु बताकर किसी शब्द का अर्थ बताना । जैसे—— गौरिव गवयः (गाय के तुल्य नील गाय होती है) । इस उपमान से गवय (नील गाय) का अर्थ ज्ञात हो जाता है।

(३) कोश —कोशग्रन्थों से शब्दों का अर्थ ज्ञात करने में बहुत सहायता मिलती है। वृत्रहा, त्रिपुरारि, मध्वरि, काय आदि का अर्थ हमें ज्ञात नहीं है तो कोश-ग्रन्थ की सहायता से इनका अर्थ इन्द्र, शिव, विष्णु, शरीर आदि ज्ञात हो जाता है।

(४) आप्तवाक्य - यथार्थवक्ता को 'आप्त' कहते हैं। वेद, शास्त्र, गुरु, माता, पिता आदि आप्त में गिने जाते हैं। बालक माता-पिता को आप्त मानकर ही बचपन में सारी भाषा सीखता है। ईश्वर, जीव, पाप, पुण्य, मोक्ष आदि का ज्ञान हमें वेद आदि से ही होता है।

(५) व्यवहार — व्यवहार का अभिप्राय है— लोक व्यवहार । बालक से लेकर वृद्ध तक लोक-व्यवहार से ही सबसे अधिक अर्थ-ज्ञान या संकेतग्रह करते हैं। संसार की सभी वस्तुओं के नाम हम लोक-व्यवहार से ही जानते हैं। माता-पिता, गुरु, साथी, मित्र आदि के व्यवहार से ही सम्बन्धियों के नाम, सम्बन्ध (भाई, चाचा, मामा आदि) का ज्ञान, पशु-पक्षियों के नाम, बाजार की सभी चीजों के नाम आदि जानते हैं। लोक- व्यवहार अर्थज्ञान का सर्वोत्तम साधन है।

(६) वाक्यशेष (प्रकरण) - वाक्यशेष का अर्थ है प्रकरण या प्रसंग नानार्थक शब्दों के अर्थ-निर्णय में सर्वोत्तम सहायक है। 'रस' और 'ध्वनि' शब्द के अनेक अर्थ हैं। प्रसंग के अनुसार इनके अर्थ का निर्णय होता है। जैसे

१. 'रसो वै सः' में रस का अर्थ' आनन्द' लिया जाएगा। परमात्मा आनन्दरूप है । २. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' (रसयुक्त वाक्य काव्य है) में रस का अर्थ 'काव्य-रस' है ।

३. 'सरसं भोजनम्' (रसयुक्त भोजन) में रस का अर्थ भोज्य षड्रस है ।

४. ' ध्वनिरात्मा काव्यस्य' (काव्य की आत्मा ध्वनि है) में ध्वनि का अर्थ 'व्यंजना' है ।

५. 'कोकिल-ध्वनि' में ध्वनि का अर्थ 'शब्द या कूजन' है।

(७) विवृति (विवरण, व्याख्या) — विवरण या व्याख्या से अनेक शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है। विशेषरूप से पारिभाषिक, तकनीकी या दार्शनिक आदि शब्दों को बिना व्याख्या के नहीं समझा जा सकता है। जैसे—तन्त्र, विधान, विधि, शासन-पद्धति, अर्थशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण-दर्शन अद्वैत, द्वैत, त्रैत, विशिष्टाद्वैत आदि

(८) प्रसिद्ध (या ज्ञात) पद का सांनिध्य - प्रसिद्ध या ज्ञात पदों की समीपता से अज्ञात शब्द का अर्थ ज्ञात होता है। जैसे—' बलाहक और विद्युत् का संयोग' में विद्युत् (बिजली) का अर्थ ज्ञात होने से बलाहक का अर्थ 'बादल' ज्ञात हुआ। 'पयोधि में मगर' मगर का अर्थ ज्ञात होने से पयोधि का अर्थ 'समुद्र' ज्ञात होता है । 'सुधा' के दो अर्थ हैं- अमृत और चूना । 'सुधा-सिक्त भवन' में भवन के सान्निध्य से 'चूना' अर्थ लिया जाएगा (चूने से पुता मकान), 'सुधा-पान से अमर देवगण' में देवगण के सांनिध्य से सुधा का अर्थ 'अमृत' लिया जाएगा।

पाश्चात्त्य विद्वानों ने अर्थबोध के तीन साधन माने हैं-

१. व्यवहार (Demonstration) – किसी वस्तु का बोध कराने के लिए उसे बार-बार दिखाना या उसकी ओर इंगित करना। इस तरह ब्लैकबोर्ड, पेन्सिल, कलम, चाक, पुस्तक, कापी, छात्र आदि शब्दों का बोध कराया जाता है।

२. विवरण (Circumlocution) — किसी वस्तु का विवरण देकर उसका बोध कराना । जैसे—समुद्र, पहाड़, जंगल, ताजमहल, किला आदि शब्दों का ज्ञान विवरण देकर कराया जाता है ।

३. अनुवाद (Translation) — एक ही भाषा के कठिन शब्दों को या अन्य भाषा के शब्दों को अनुवाद के द्वारा समझाया जाता है। जैसे शतक्रतु = इन्द्र, विवस्वान् = सूर्य । अंग्रेज को सेव = Apple, आम = Mango कहकर समझाया जाता है।

पाश्चात्त्य विद्वानों द्वारा निर्दिष्ट अर्थबोध के ये तीन साधन उपर्युक्त आठ साधनों की तुलना में बहुत न्यून प्रतीत होते हैं।

शब्दशक्ति

शब्द से अर्थ का बोध होता है। इसमें शब्द बोधक है और अर्थ बोध्य ।

'गाय का दूध पीओ' में गाय और दूध शब्द हैं, इनसे गाय - पशु और दूध-वस्तु का बोध कराया जाता है। प्रयोग या उपयोग में अर्थ (वस्तु) ही आता है, शब्द नहीं। शब्द अर्थ (वस्तु) का बोध कराकर निवृत्त हो जाता है। इसलिए भाषा में महत्त्व अर्थ का है। शब्द और अर्थ के सम्बन्ध को वाच्य-वाचक या बोध्य-बोधक सम्बन्ध कहते हैं । शब्द वाचक या बोधक है, अर्थ वाच्य या बोध्य ।

संस्कृत के काव्यशास्त्रियों ने शब्द और अर्थ के सम्बन्ध में गहन मनन-चिन्तन किया है। इस विवेचन को वे 'शब्दशक्ति' या 'वृत्ति - निरूपण' नाम से प्रस्तुत करते हैं। शब्दों से होने वाला अर्थ तीन प्रकार का है— वाच्य लक्ष्य और व्यंग्य । इसी आधार पर शब्द भी तीन प्रकार का होता है— वाचक लक्षक और व्यंजक । इन तीनों में विद्यमान शक्ति या वृत्ति को अभिधा, लक्षणा और व्यंजना कहते हैं।

उदाहरण

शक्ति या वृत्ति	शब्द	अर्थ	उदाहरण
अभिधा	वाचक	वाच्य (मुख्य)	गाय, अश्व, मनुष्य
लक्षणा	लक्षक	लक्ष्य (गौण)	गंगा में घोष (कुटी)
व्यंजना	व्यंजक	व्यंग्य (प्रतीयमान)	शाम हो गई

अभिधा - यह मुख्य वृत्ति या शक्ति है । अभिधा से बताया जाने वाला अर्थ मुख्य होता है। यह शब्द का लौकिक और व्यावहारिक अर्थ है ।

- ✓ 'गाय दूध देती है',
- ✓ 'घोड़ा दौड़ता है',
- ✓ 'मनुष्य सामाजिक प्राणी है'

में गाय, घोड़ा, मनुष्य का लोक - प्रचलित अर्थ लिया जाता है। इसमें गाय आदि शब्दों को वाचक, गाय (पशु) आदि अर्थों को वाच्य और यह अर्थ बताने वाली शक्ति को अभिधा' कहते हैं।

लक्षणा — लक्षणा में तीन बातें होती हैं –

१. मुख्य अर्थ में बाधा,

२. मुख्यार्थ से सम्बद्ध अर्थ का लेना,

३ . रूढ़ि या प्रयोजन कारण।

- 'गंगायां घोषः' (गंगा में कुटी)

गंगा जल की धारा को कहते हैं। जल की धारा में कुटी नहीं हो सकती, अतः गंगा के किनारे कुटी अर्थ होता है ।

- 'देवदत्त गधा है',
- 'मोहन पशु है'

में आदमी को गधा या पशु कहा है।

आदमी गधा नहीं हो सकता है, अतः अर्थ होता है कि वह आदमी गधा पशु के तुल्य मूर्ख और विवेकहीन है। इसमें गंगा आदि शब्द लक्षक हैं, गंगातीर आदि अर्थ लक्ष्य हैं तथा बोधकशक्ति 'लक्षणा' है।

व्यंजना- व्यंजना में व्यंग्य अर्थ मुख्य होता है। इसको प्रतीयमान अर्थ या ध्वनि कहते हैं। यह वाच्य अर्थ और लक्ष्य अर्थ से आगे की कोटि है। व्यंग्य अर्थ असंख्य प्रकार का हो सकता है।

'गंगायां घोषः' (गंगा में कुटी)

में शीतलता, पवित्रता आदि अर्थ व्यंग्य अर्थ है। 'शाम हो गई' के सैकड़ों अर्थ हैं। शाम होते ही जिसको जो काम करना है।वह करे। इसी प्रकार 'सबेरा हो गया', 'दीवाली आ गई', 'होली आ गई' के सैकड़ों अर्थ निकलते हैं। 'दीवाली', 'होली' कहते ही बच्चों के लिए मनोरंजन, मिठाई खाना, रंग डालना आदि सैकड़ों अर्थ आ जाते हैं। इनमें 'गंगा' आदि शब्दों को व्यंजक, पवित्रता आदि अर्थों को व्यंग्य और शब्दशक्ति को व्यंजना कहते हैं।